© 2025 IJNRD | Volume 10, Issue 8 August 2025 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पर्यावरण एवं आर्थिक विकास

डॉ. अनिल ठाकुर

सारांश

पर्यावरण और आर्थिक विकास के बीच संतुलन बनाए रखना आज के युग की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। आर्थिक विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों का दोहन आवश्यक है, लेकिन यह दोहन पर्यावरण को नुकसान पहुंचा सकता है। इस लेख में पर्यावरण और आर्थिक विकास के बीच संबंध, पर्यावरणीय समस्याएं, सतत विकास की अवधारणा, और पर्यावरण संरक्षण के लिए आवश्यक कदमों पर विस्तार से चर्चा की गई है। साथ ही, पर्यावरण और आर्थिक विकास के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए नीतिगत उपायों पर भी प्रकाश डाला गया है।

कूट शब्द: पर्यावरण, विकसित देश, प्राकृतिक संसाधन, आर्थिक विकास, माधव संसाधन ।

प्रस्तावना

पर्यावरण और आर्थिक विकास दोनों ही मानव जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। आर्थिक विकास के बिना गरीबी, बेरोजगारी और असमानता जैसी समस्याओं का समाधान संभव नहीं है, जबकि पर्यावरण के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। हालांकि, आर्थिक विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों का दोहन आवश्यक है, लेकिन यह दोहन पर्यावरण को नुकसान पहुंचा सकता है। इसलिए, पर्यावरण और आर्थिक विकास के बीच संतुलन बनाए रखना आज के युग की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है।

इस लेख में पर्यावरण और आर्थिक विकास के बीच संबंध, पर्यावरणीय समस्याएं, सतत विकास की अवधारणा, और पर्यावरण संरक्षण के लिए आवश्यक कदमों पर विस्तार से चर्चा की गई है। साथ ही, पर्यावरण और आर्थिक विकास के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए नीतिगत उपायों पर भी प्रकाश डाला गया है।

पर्यावरण और आर्थिक विकास का संबंध

पर्यावरण और आर्थिक विकास के बीच गहरा संबंध है। आर्थिक विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों का दोहन आवश्यक है, लेकिन यह दोहन पर्यावरण को नुकसान पहुंचा सकता है। उदाहरण के लिए, औद्योगीकरण और शहरीकरण के कारण वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और मृदा प्रदूषण जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं। इसके अलावा, वनों की कटाई और खनन जैसी गतिविधियों के कारण प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास होता है।

हालांकि, पर्यावरण के बिना आर्थिक विकास संभव नहीं है। प्राकृतिक संसाधनों के बिना कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्र जैसे आर्थिक गतिविधियों का संचालन संभव नहीं है। इसलिए, पर्यावरण और आर्थिक विकास के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है।

पर्यावरणीय समस्याएं

आर्थिक विकास के कारण उत्पन्न होने वाली पर्यावरणीय समस्याएं निम्नलिखित हैं:

1. वायु प्रदूषण:

औद्योगीकरण और शहरीकरण के कारण वायु प्रदूषण की समस्या उत्पन्न होती है। वाहनों और कारखानों से निकलने वाले धुएं के कारण वायु प्रदूषण बढ़ता है। इससे मानव स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है और ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

2. जल प्रदूषण:

औद्योगिक अपशिष्ट और कृषि में उपयोग किए जाने वाले रसायनों के कारण जल प्रदूषण की समस्या उत्पन्न होती है। इससे जल स्रोत प्रदूषित हो जाते हैं और मानव स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

3. मृदा प्रदूषण:

कृषि में उपयोग किए जाने वाले रसायनों और औद्योगिक अपशिष्ट के कारण मृदा प्रदूषण की समस्या उत्पन्न होती है। इससे मृदा की उर्वरता कम हो जाती है और कृषि उत्पादन पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

4. वनों की कटाई:

आर्थिक विकास के लिए वनों की कटाई की जाती है। इससे वन्यजीवों का आवास नष्ट होता है और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

5. जलवायु परिवर्तन:

आर्थिक विकास के कारण उत्पन्न होने वाले ग्रीनहाउस गैसों के कारण जलवायु परिवर्तन की समस्या उत्पन्न होती है। इससे ग्लोबल वार्मिंग, समुद्र स्तर में वृद्धि और मौसम में परिवर्तन जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

सतत विकास की अवधारणा

सतत विकास की अवधारणा का उद्देश्य पर्यावरण और आर्थिक विकास के बीच संतुलन बनाए रखना है। सतत विकास का अर्थ है कि वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं से समझौता न किया जाए। सतत विकास के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं:

1. प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण:

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना सतत विकास के लिए आवश्यक है। इसके लिए वनों की कटाई को रोकना, जल स्रोतों को प्रदूषित होने से बचाना और मृदा की उर्वरता को बनाए रखना आवश्यक है।

2. नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग:

नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग करना सतत विकास के लिए आवश्यक है। इसके लिए सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और जल ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग किया जा सकता है।

3. पर्यावरण अनुकूल प्रौद्योगिकी:

पर्यावरण अनुकूल प्रौद्योगिकी का उपयोग करना सतत विकास के लिए आवश्यक है। इसके लिए ऊर्जा कुशल उपकरणों और प्रदूषण नियंत्रण तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है।

4. जागरूकता अभियान:

लोगों को पर्यावरण संरक्षण के महत्व के बारे में जागरूक करना सतत विकास के लिए आवश्यक है। इसके लिए जागरूकता अभियान चलाए जा सकते हैं।

पर्यावरण संरक्षण के लिए आवश्यक कदम

पर्यावरण संरक्षण के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं:

1. वनों का संरक्षण:

वनों का संरक्षण करना पर्यावरण संरक्षण के लिए आवश्यक है। इसके लिए वनों की कटाई को रोकना और वृक्षारोपण को बढ़ावा देना आवश्यक है।

2. जल स्रोतों का संरक्षण:

जल स्रोतों का संरक्षण करना पर्यावरण संरक्षण के लिए आवश्यक है। इसके लिए जल प्रदूषण को रोकना और जल संरक्षण के उपाय करना आवश्यक है।

3. मृदा संरक्षण:

मृदा संरक्षण करना पर्यावरण संरक्षण के लिए आवश्यक है। इसके लिए मृदा प्रदूषण को रोकना और मृदा की उर्वरता को बनाए रखना आवश्यक है।

4. प्रदूषण नियंत्रण:

प्रदूषण नियंत्रण करना पर्यावरण संरक्षण के लिए आवश्यक है। इसके लिए वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और मृदा प्रदूषण को रोकने के उपाय करना आवश्यक है।

पर्यावरण और आर्थिक विकास के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए नीतिगत उपाय

पर्यावरण और आर्थिक विकास के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए निम्नलिखित नीतिगत उपाय किए जा सकते हैं:

1. पर्यावरणीय नीतियां:

सरकार को पर्यावरणीय नीतियां बनानी चाहिए जो पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा दें। इन नीतियों में प्रदूषण नियंत्रण, वन संरक्षण और जल संरक्षण जैसे उपाय शामिल होने चाहिए।

2. आर्थिक प्रोत्साहन:

सरकार को पर्यावरण अनुकूल गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए आर्थिक प्रोत्साहन प्रदान करना चाहिए। इन प्रोत्साहनों में कर छूट, सब्सिडी और अनुदान शामिल हो सकते हैं।

3. जन जागरूकता:

लोगों को पर्यावरण संरक्षण के महत्व के बारे में जागरूक करना आवश्यक है। इसके लिए जागरूकता अभियान चलाए जा सकते हैं।

आर्थिक विकास:

आर्थिक विकास के आधार पर विश्व के देशों को क्रमशः तीन वर्गों में रखा गया है, विकसित, विकासशील व अविकसित देश। यापि पर्यावरण की समस्या विश्व समस्या है और विश्व के सारे देश इससे ग्रसित हैं, तथापि इसका सबसे बड़ा प्रभाव विकासशील एवं अविकासशील देशों पर पड़ा है, इन देशों का आर्थिक विकास प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से पर्यावरणीय योजनाओं द्वारा रूक सा गया है। जब कभी ये देश आर्थिक सन्तुलन को बनाए रखने के लिये आर्थिक योजनाओं को लागू करते है, तब विकसित देश इन योजनाओं में अवरोध उत्पन्न करते हैं, विकसित देशों की नीति तृतीय विश्व के देशों की प्रगति में बाधक है।

यह सार्वभौमिक तथ्य है कि चाहे विकसित देश हो या विकासशील देश बिना आर्थिक प्रगति के पर्यावरण संरक्षण असम्भव है। जैसे तृतीय विश्व के देशों को ईंधन की लकड़ी के लिये वनों पर निर्भर रहना पड़ता है और हर साल करोड़ों टन लकड़ी ईंधन के लिये उपयोग में लाई जाती है। यदि सभी लोगों को इंधन की पूर्ति के लिये मिट्टी का तेल या गैस उपलब्ध करा दिया जाये तो निश्चित रूप से वनों के कटाव में कमी आएगी। मानव और पर्यावरण एक दूसरे से संबंधित है। एक जो आत्मनिर्भर है तथा अपनी आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने में स्वयं सक्षम है। वह पर्यावरणवादी अधिक हो सकता है। पर्यावरण संरक्षण तो अपने आप हो जाएगा जब प्रत्येक व्यक्ति आर्थिक रूप से सुदृढ हो जाएगा। इन दोनों आयामों के बीच उत्पन्न संकट को तनी दूर किया जा सकता है जबकि आर्थिक विकास हो।

विकासशील देश जैसे भारत में प्रति व्यक्ति जी.एच.पी. 350 अमेरिकन डॉलर है, जबकि विकसित देश जैसे जापान में 25,430 अमेरिकन डालर है। इसी तरह एनर्जी इन्टेक में विकासशील देश विकसित देशों की तुलना में नगण्य है। इतने विशाल स्तर पर विभिन्नता तृतीय देशों को उनके आर्थिक विकास के लिये मजबूर करती है परन्तु विकसित देश उन्हें यह करने से रोकते हैं। विकसित देशों का कुल घरेलू उत्पाद उद्योगों से अधिक है जबकि विकासशील देशों को अधिक उत्पादन कृषि क्षेत्र से प्राप्त होता है। विकासशील एवं अविकासशील देशों का परम्परागत समाज प्राकृतिक पर्यावरण के साथ सामंजस्य स्थापित किये हुए है, यदि उत्तरी देशों का यह फिजूल संसाधन उपयोग जारी रहा तो यह निश्चित रूप से फ्रेजाइल इको-सिस्टम को नष्ट कर देगा।

बढ़ता हुआ ऋण, गिरता व्यापार एवं तकनीक विकास में कमी जैसे तत्व तृतीय विश्व के देशों में प्राकृतिक संसाधनों का विदोहन करने के लिये दबाव डाल रहे है, जिससे पर्यावरण संकट उत्पन्न हुआ है। गरीबी एवं पर्यावरण संरक्षण एक-दूसरे से जुड़े हुए है और और इन्हें पृथक नहीं किया जा सकता है। भारत में विश्व की 16 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है तथा यह 3 प्रतिशत विश्व ऊर्जा का उपयोग करती है। साथ ही साथ एक प्रतिशत विश्व का कुल राष्ट्रीय उत्पाद ग्रहण करती है। भारत की वर्तमान समस्याओं में जनसंख्या विस्फोट, निरक्षरता, गरीबी, महिलाओं का निम्न स्तर, भूखमरी, सूखा एवं प्राकृतिक आपदाएँ है।

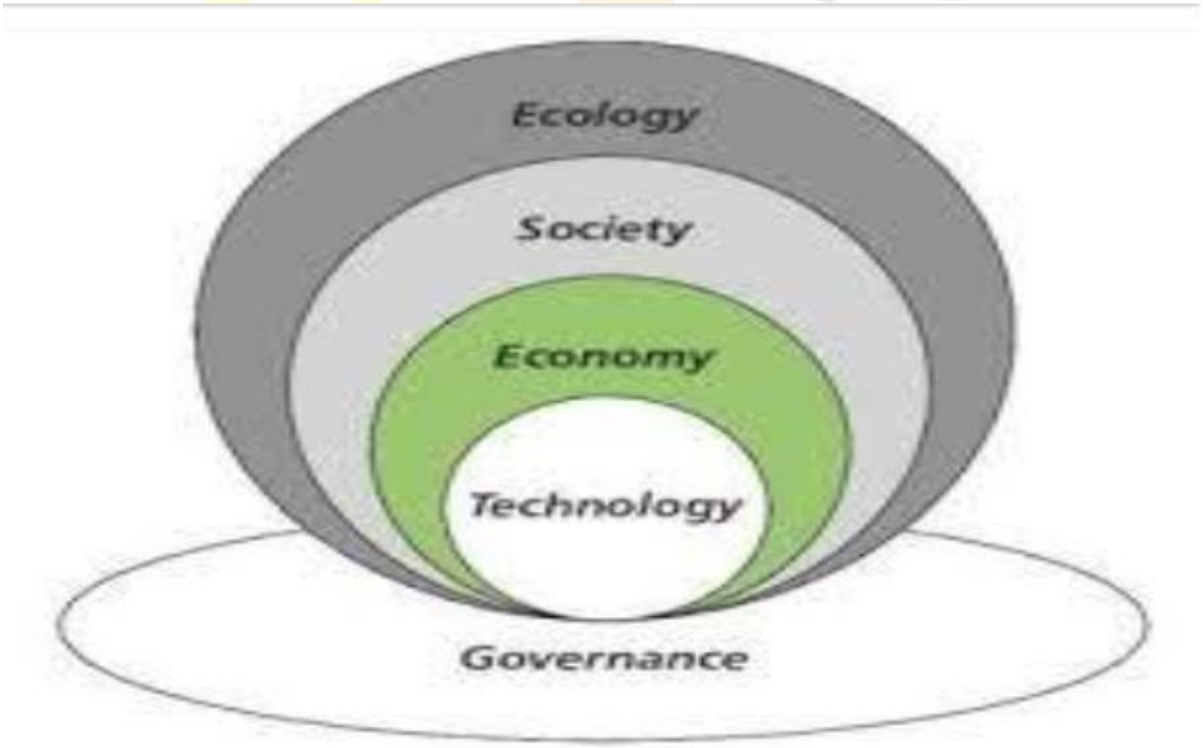

पर्यावरण एवं विकास एक सिक्के के दो पहलू है। वर्तमान समय में सामाजिक-आर्थिक विकास एवं पर्यावरण संरक्षण दो केन्द्रीय मुद्दे हैं, इन दोनों आयामों में पारस्परिक सहयोग न होने के कारण नीतियों के निर्धारण में अवरोध उत्पन्न हुआ है। सम्पूर्ण विकास एवं स्वस्थ पर्यावरण को प्राप्त करने के लिये जरूरी है कि सरकारी और गैर सरकारी संस्थाएँ एक साथ मिल-

जुलकर कार्य करें। पर्यावरणविदों एवं अर्थशास्त्रियों में पूर्व में जो विवाद था उसने वर्तमान में लडाई का रूप ले लिया है। ये विवाद जिनके बीच है, वे इस प्रकार है :

(1) ये जो पर्यावरण का शोषण अपने व्यक्तिवादी दृष्टिकोणों के लिये कर रहे हैं।

(2) वे जो बिना आर्थिक विकास के पूर्ण रूपेण पर्यावरण का संरक्षण करना चाहते हैं।

आर्थिक विकास एक ओर तो जीवनस्तर में वृद्धि, करने के लिये कटिबद्ध है वहीं दूसरी ओर पर्यावरण संरक्षण का भी मार्ग प्रशस्त करता है। दोनों आयाम आर्थिक विकास एवं पर्यावरण संरक्षण एक सिक्के के दो पहलू है, एक के बिना दूसरे का अस्तित्व नगण्य है। संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग सम्पूर्ण विकास एवं उचित योजनाओं के निर्धारण को ध्यान में रखते हुए एवं साथ ही भूमि संसाधन का उचित उपयोग निश्चित रूप से पर्यावरण संरक्षण एवं आर्थिक विकास में सहयोग कर सकता है, इसके लिये मीडिया महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। निम्नलिखित तथ्य इन आयामो के संरक्षण के लिये आवश्यक है।

- सौर आधारित ऊर्जा का उपयोग जो कि जीवाश्म ईंधन के प्रयोग को कम कर सके।
- नया परिवहन नेटवर्क एवं नगरों को नई योजनाओं द्वारा बसाना।
- भूमि एवं पूजी का पुन वितरग।
- छोटे परिवार की अवधारणा का अनुसरण करना।

पृथ्वी शिखर सम्मेलनः

विश्व आज पर्यावरण की समस्या से ग्रसित है, जो कि पृथ्वी में निरन्तर ताप वृद्धि से लेकर वनों के कटाव तक है। झील, नदियाँ एवं सागर, सीवेज एवं उद्योगों से निकलने वाले विषैले पदार्थों में परिवर्तित हो गए हैं। लाखों जीव-जन्तु खत्म होने की कगार पर हैं। वायु प्रदूषण, ओजोन स्तर में छिद्र और ग्रीन हाउस प्रभाव से वर्तमान मानव अस्तित्व को खतरा उत्पन्न हो गया है। संसाधनों, का अत्यधिक शोषण तथा उद्योगों एवं वाहनों से निकलने वाली कार्बन मोनोऑक्साइड गैस से पृथ्वी के तापमान में वृद्धि की यही दर रही तो आने वाले पचास वर्षों में समुद तटीय क्षेत्रों में स्थित भू-भागों में लगभग तीन मीटर समुद का पानी भर जाएगा, जिससे विश्व के बड़े-बड़े बन्दरगाह भी जल मग्न हो जाएँगे।

संयुक्त राज्य अमेरिका के नेशनल ओरोनोटिकल एवं स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (नासा) की एक रिपोर्ट के अनुसार, पिछले सौ सालों में तापमान पर किये एक शोध कार्य द्वारा यह अनुमान लगाया गया कि 1888 से 1988 के बीच पृथ्वी के तापमान में 0.60 से 1.20 सेंटीग्रेड औसत तापमान की वृद्धि हुई। अन्त्रतराष्ट्रीय ऊर्जा संगोष्ठी (आई.ई.सी.) जो कि 1990 में दिल्ली में हुई। इस ऊर्जा संगोष्ठी (आई.ई.सी.) में वैज्ञानिकों ने यह घोषणा की कि ग्रीन हाउस प्रभाव से पृथ्वी के तापमान में मी वृद्धि हो रही है। प्रमुख वैज्ञानिक रिचर्ड हैटन (बूटस रिसर्च सेंटर, मेसाचुसेट, कनाडा, डब्ल्यू. आर.सी.एम.) लिखते हैं कि पृथ्वी की वनस्पतियों में लगभग बीस हजार अरब टन कार्बन डाइऑक्साइड गैस विद्यमान है। संयुक्त राज्य पर्यावरण कार्यक्रम एवं विश्व संसाधन की 1990-91 की संयुक्त रिपोर्ट विश्व संसाधन में कहा गया है कि विश्व के तीन देश चीन, भारत एवं ब्राजील प्रमुख रूप से ग्रीन हाउस प्रभाव के लिये जिम्मेदार है। अतः आर्थिक विकास में पर्यावरण के योगदान को निम्न चित्र से समझ सकते हैं।

वर्ग	क्षेत्रफल (वर्ग किमी)	प्रतिशत
कुल वन क्षेत्र	692,027	21.05
झाड़िया	42,176	1.28
वन्येत्तर क्षेत्र	2,553,060	77.67
कुल भौ. क्षेत्र	3,287,263	100.00

* Includes 4662 km² area under mangroves

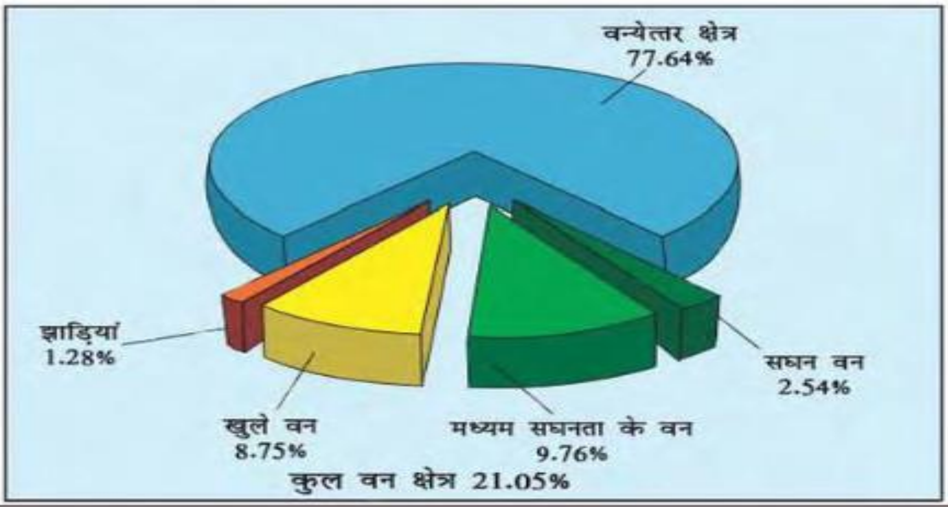

स्रोत : इंडियन स्टेट ऑफ फारेस्ट रिपोर्ट– भारतीय वन सर्वेक्षण

विश्व के विकसित, विकासशील एवं अविकसित देशों में वनों का निरन्तर कटाव, भूमि पर मानव के बढ़ते हुए दबाव एवं औद्योगिकरण के विस्तार के कारण हो रहा है। विश्व में प्रतिवर्ष लगभग 0.6 अरब हेक्टेयर वन भूमि का कटाव हो रहा है एवं अकेले भारत में लगभग 1.6 करोड़ वन भूमि या तो अधिवासों के रूप में या कृषि उपायोग हेतु उपयोग में लाई जा रही है। परिणामस्वरूप भारत में 15 हजार वनस्पति-जातियाँ एवं लगभग 75 हजार जन्तु-जातियाँ, सामान्यतः समाप्त ही हो गई हैं। जनसंख्या के विस्फोट से मानव अस्तित्व के साथ-साथ जन्तुओं, वनस्पतियों एवं संसाधनों के अस्तित्व को भी भयकर खतरा उत्पन्न हो गया है। एक रिपोर्ट के अनुसार सिर्फ भारत 4.76 करोड़ टन कार्बन डाइऑक्साइड एवं 52 लाख टन मिथेन गैस उत्पन्न करने में सहायक रहा है। शुद्ध जल संस्थान मैनीटोवा कनाडा में उत्तर-पश्चिमी ओन्टोरियों की एक झील पर एसिड घोल की मात्रा बढ़ रही है, जो कि मत्स्य पारिस्थितिकी को असन्तुलित कर रही है। डब्ल्यू.आर.सी.एम. की इस रिपोर्ट में कहा गया है कि प्रतिवर्ष में लगभग एक खरब टन कार्बन डाइऑक्साइड गैस मिश्रित हो रही है। उपरोक्त वर्णन से यह स्पष्ट हो गया है कि वर्तमान समय में ग्रीन हाउस प्रभाव जैसे संकट से मानव अस्तित्व को भी भयंकर खतरा उत्पन्न हो गया है।

जून 1992 में रियो डि जेनेरो (बाजील) में आयोजित 'पृथ्वी सम्मेलन ने पर्यावरणविदों को एक नई दिशा दी, पडला विश्व स्तर का सम्मेलन 1972 में स्टाकहोम में आयोजित किया गया था। यूनाईटेड नेशन्स कान्फ्रेंस ऑन इन्वायरनमेन्ट एंड डवलपमेंट ने भविष्य के लिये एक पर्यावरण एजेंडा बनाया है। इस एजेंडा में 'अर्थ चार्टर बनाया गया है, जो कि पर्यावरण के सम्पूर्ण विकास से सम्बन्धित है इसी से सम्बन्धित 'एजेंडा-21' इस ग्रह की व्यवस्था के लिये तैयार किया गया है।

इन शिखर सम्मेलनों में विश्व में बढ़ती पर्यावरणीय असमानताओं से उत्पन्न संकटों पर विचार-विमर्श किया गया, पर्यावरण से उत्पन्न विवाद ने उत्तरी औद्येगिक देशों (यूरोप, उत्तरी अमरीका एवं जापान) तथा दक्षिणी विकासशील देशों (एशिया, अफ्रीका एवं दक्षिण अमरीका), के बीच नए आयाम शुरू किये। विकसशील देशों ने अपने उपभोक्तावादी दृष्टिकोण से संसाधनों का अत्यधिक उपभोग कर पर्यावरण प्रदूषण को बढ़ाया है। पर्यावरणीय विनाश प्रत्यक्ष रूप से उपभोग के अनुपात पर निर्भर करता है।

विकासशील देश अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये भी इन संसाधनों का उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। इसलिये वे देश गरीबी और आर्थिक संकट से गुजर रहे हैं। उत्तरी औद्योगिक देशों और दक्षिण विकासशील देशों के बीच पर्यावरण से सम्बन्धित तीन समझौतों पर हस्ताक्षर किये गए हैं। (1) द मान्ट्रियाल प्रोटोकोल (2) बायोडाइबर सिटी कन्वेन्शन (3) क्लाइमेट चेंज कन्वेंशन। द मान्ट्रियाल समझौता ओजोन परत के निरन्तर नष्ट होने से सम्बन्धित था, दूसरा बायोडाइबर सिटी कन्वेन्शन पृथ्वी के संसाधनों के सम्पूर्ण उपयोग से सम्बन्धित था, जबकि तीसरा क्लाइमेट चेंज कन्वेंशन विकासशील

देशों द्वारा विकसित देशों पर संसाधनों के अंधाधुंध उपयोग से सम्बन्धित था, जो कि पृथ्वी पर निरन्तर बढ़ते तापमान का कारण है। भारत में पर्यावरण संरक्षण हेतु उठाए गए कदम निम्न हैं जो कि मील का पत्थर साबित हुए हैं-

1. चिपको आन्दोलन जो कि अंधाधुंध पेड़ों के कटाव को रोकने से सम्बन्धित है।

2. गुजरात व केरल के लोगों का न्यूक्लियर पावर प्लांट के विरुद्ध आन्दोलन।

3. भोपाल गैस पीड़ितोंद्वारा बढ़ते औद्योगिक प्रदूषण के विरुद्ध कठोर कदम।

4. उड़ीसा के लोगों का बाल्को परियोजना का विरोध करना।

5. चिल्का झील में प्रोन फार्मिंग।

6. मेधा पाटेकर एवं सुन्दरलाल बहुगुणा द्वारा सरदार सरोवर एवं टिहरी बाँध का विरोध ।

निष्कर्ष

पर्यावरण और आर्थिक विकास के बीच संतुलन बनाए रखना आज के युग की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। आर्थिक विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों का दोहन आवश्यक है, लेकिन यह दोहन पर्यावरण को नुकसान पहुंचा सकता है। इसलिए, पर्यावरण और आर्थिक विकास के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए सतत विकास की अवधारणा को अपनाना आवश्यक है। सतत विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग और पर्यावरण अनुकूल प्रौद्योगिकी का उपयोग करना आवश्यक है। साथ ही, पर्यावरण संरक्षण के लिए वनों का संरक्षण, जल स्रोतों का संरक्षण और प्रदूषण नियंत्रण जैसे उपाय करने आवश्यक हैं

संदर्भ (References)

1. United Nations Environment Programme (UNEP) - https://www.unep.org

2. Intergovernmental Panel on Climate Change (IPCC) - https://www.ipcc.ch

3. World Bank Reports on Sustainable Development.

4. भारत सरकार की पर्यावरण नीतियां और योजनाएं।

5. सतत विकास लक्ष्य (Sustainable Development Goals) - संयुक्त राष्ट्र।

7 bhttps://www.prabhasakshi.com

8. अग्रवाल, डॉ. अनुपम, 'विकास एवं पर्यावरणीय अर्थशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेशन ।

9. नचिकेता नीरज. पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी अ डायनामिक एप्रोच, जी के पब्जिकेशन, 2019 ।

10. चतुर्भुज मामोरिया, बी.एल. शर्मा 'संसाधन एवं पर्यावरण साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा 2015

11. गौतम अल्का. "संसाधन एवं पर्यावरण, शारदा पुस्तक भवन, इलाहबाद 2007 |